(1) (C) सिधी जिला।

म.प्र. में नवपाषाण काल का स्थल- मह युग मुख्य रूप से बसे हुए कृषि के विकास और तराशे गए पत्थरों से बने औजारों और हथियारों के उपयोग की विशेषता है। लोगों ने बहुत तेज धार वाले तराशे गए पत्थरों से बने औजारों के अलावा लघुपाषाणी फलक का इस्तेमाल किया जैसे कुल्हाड़ी, आरी, जैस्पर से बनी कुल्हाड़ी आदि। नवपाषाण युग के लोग मिट्टी और ईख के बने आयाताकार या गोलाकार घरों में रहते थे मध्य प्रदेश का प्रमुख नवपाषाण स्थल सिधी जिले में कुंजुन है।

(2) (C) कायथा।

नवपाषाण युग- 4000 से 1200 ईसा पुर्व तक। यह नवपाषाण युग के बाद शुरू हुआ। इस युग में धातु का उपयोग उपकरण बनाने में किया जाने लगा। ताँबा मानव द्वारा उपयोग कि जाने वाली प्रथम धातु थी।

कायथा और नागदा की खोज डॉ. वाकणकर ने की थी।

महेश्वर और नवदातोली की खोज डॉ. संकलिया ने की थी।

ताम्र पाषाण युग नर्मदा, चंबल और बेतवा नदियों के तट पर विकसित हुआ। ताम्रपाषाण संस्कृति की निशानी वर्ष 1923 में जबलपुर और बालाघाट जिले से प्राप्त हुई थी।

(3) (D) ताम्रपाषाण युग (2800-700 ई.पुर्व) ने पत्थर के औजारों के व्यक्तिगत उपयोग से ताँबे और पत्थर के औजारों के संयुक्त उपयोग के लिए एक संक्रमण को चिंहिन्त किया है।

ताम्रपाषाण के लोगों की अर्थव्यवस्था कृषि, शिकार, और मछली पकड़ने पर निर्भर थी।

हड़प्पा संस्कृति के अंत के बाद बड़ी संख्या में ताम्रपाषाण संस्कृतियाँ सामने आयीं जो निम्नलिखित हैं-

स्थल	-	राज्य
बनास/अहर	-	राजस्थान
कायथा, मालवा, एरण	-	मध्यप्रदेश
नेवासाद दायमाबाद,	-	महाराष्ट्र इनामगाँव

अहर संस्कृति- दक्षिण-पुर्वी राजस्थान/3000-1500 ई.पुर्व)। अहर, बालाथल, गिलुंड आदि स्थल थे। संस्कृति की विशेषता काले और लाल मृदमांड थे, जिसे सफेद डिजाइनों से सजाया गया था।

मालवा संस्कृति- 1600-1300 ई.पू.। महत्वपूर्ण नर्मदा और उसकी सहायक नदियों के क्षे,? नवादटोली, एरण, नगाडा। यह सबसे ताम्रपाषाण बस्तियों में से एक थी। अनाज के भंडारण के लिए उपयोग की जाने वाली छोटी गोल झोपड़ियाँ उपयोग में भी। विशेष विशेषता- मोटी चमकदार सतह के मृदमांड थे जिसके ऊपर लाल या काले रंग का डिजाईन था।

प्रयास या रंगपुर संस्कृति- यह हड़प्पा संस्कृति से लिया गया था। चमकदार रेडवेयर इस संस्कृति की अनूठी विशेषता थी।

(4) (D) मध्य पाषाण (मिसोलिथिक) युग (900 ई. पुर्व) - मेसोलिथिक मानव तब भी शिकार पर काफी हद तक निर्भर थे, लेकिन अब उन्होंने कुत्ते, भेड़, बकरी, गाय, बैल, भैंस, जंगली घोड़ा आदि जानवरों को पालने की शुरुआत की। मध्यप्रदेश के आदमगढ़ और राजस्थान के बागोश से जानवरों के पालन का सबसे पहला सबूत मिला।

पुरापाषाण युग- यह 206 मिलियन वर्ष पहले का सबसे प्राचीन काल है। सबसे आदिम पत्थर के औजारों के लिए यह आमु प्रसिद्ध है। इस युग की मनुष्य छोटे 'बैंड'' में समुहुकृत होता था और पौधों के इकट्ठा करने, मछली पकड़ने शिकार करने शामिल होता था।

नवपाषाण युग- यह पाषाण काल की उसी अवधि है और इसकी 10200 ई.पुर्व से 4500 BC तक मानी जाती है जो ''कांस्य युग'' की शुरूआत के साथ समाप्त हुई।

(5) (A) हथनोरा- मध्यप्रदेश में होशंगाबाद से लगभग 35 किलोमीटर पुर्व में सीहोर जिले का स्थल है। भारत में मानव अस्तित्व का प्रथम प्रमाण नर्मदा घाटी के इसी स्थल से प्राप्त हुआ था। भूवैज्ञानिक ने नर्मदा के तट पर दक्षिण एशिया के मानव पूर्वज के एकमात्र ज्ञात जीवाश्म की खोज की।

(6) (A) नवदाटोली- नर्मदा नदी के तट पर स्थित है। काल- 1660 ई.पूर्व अर्थात ताम्रपाषाण संस्कृति।

एरण- ताम्रपाषाण युग का एक और सबसे पुराना पुनर्वास है। इसकी समय अवधि लगभग 2000-700 ई.पूर्व मानी जाती है। यह स्थान गुप्त वंश के समय भी फला-फूला, जिसमें से एक शिलालेख (सती बलिदान की घटना का चित्रण) खोजा गया ।

त्रिपुरी- कलचुरियों की राजधानी थी जिसमें शासक भूमका के सिक्के प्रसिद्ध हैं।

गुर्जर अभिलेख- यह मध्यप्रदेश के दतिया जिले के ग्राम गुर्जर में पाया जाता है। अशोक के लघु अभिलेख के लिए पहचाना जाता है।

(7) **(A) नर्मदा नदी-** नर्मदा नदी या नर्बुद्धा भी कहा जाता है। प्राचनी काल में इसे रेवा और पूर्वगंगा कहा जाता है।
बेतवा- संस्कृत में वेत्रावती। इस नदी का उल्लेख महाकाव्य महाभारत में चर्मणवती नदी के साथ मिलता है। दोनों यमुना की सहायक नदियाँ हैं। वेत्रावती को शुक्तिमती के नाम से भी जाना जाता है।
चंबल- प्राचीन काल में चर्मणवती नाम से भी जाना जाता था जिसका अर्थ है वह नदी जिसके किनारे पर चमड़ा सुखाया जाता है।

(8) **(B) वैदिक काल (1500 से 600 ई.पूर्व)-** वैदिककाल को 2 निम्न भागों में बांटा गया है- (1) प्रारंभिक वैदिक काल- (1500-1000), (2) उत्तर वैदिक काल- (100-600 ई.पूर्व)
प्रारंभिक वैदिक काल- जाति व्यवस्था लचीली थी और जन्म के बजाए पेरों पर आधारित थी शूद्र या अछुत की कोई अवधारणा नहीं थी। महिलाओं को अधिक स्वतंत्रता की अनुमति दी गई थी। उन्हें एक निश्चित सीमा तक उस समय की राजनीति प्रक्रिया में भाग लेने की अनुमति थी।
उत्तर वैदिक काल- जाति व्यवस्था अधिक कठोर जिसमें जन्म मुख्य मानदंड था। **उत्तर वैदिक काल** में शूद्र मुख्य आधार बन गए। उनका एकमात्र कार्य उच्च जातियों की सेवा करना। महिलाओं को अधीनस्थ और विनम्र भूमिकाओं से हटाकर समाज में उनकी भागीदारी से प्रतिबंधित कर दिया गया था।

(9) **(D) 1, 2 और 3**

(10) **(B) अवन्ति-** यह क्षेत्र एक समय के लिए मालवा के ऐतिहासिक प्रांत का हिस्सा था। अवन्ति को 2 भागों में बांटा गया था- (1) उत्तर अवन्ति (राजधानी-उज्जयिनी) (2) दक्षिणि अवंती (राजधानी-महिष्मती) भगवान बुद्ध, राजा बिंबिसार प्रज्ञा के समकालीन थे। प्रद्योत हाथियों को पालतु बनाने में माहिर थे। मगध राजा विम्बिसार ने अपने आयुर्वेदिक चिकित्सक ''जीवक'' को पीलिया रोग से पीड़ित प्रद्योत के इलाज के लिए अवन्ति भेजा था।
चेंदि- शक्तिमती चेंदी राजधानी थी। इसका विस्तार बुंदेलखंड के पूर्वी भाग तक था। इसकी एक शाखा कलिंग में शुरू की गई थी।

(11) **(A) महावस्तु में पूर्वी मात्तवा क्षेत्र में धसान नदी और बेतवा क्षेत्र के बीच एक प्राचीन भारतीय जनपद था। जनपद कानाम दर्शन, धसान नदी के प्राचीन नाम से लिया गया था।**

(12) **(C) 1 और 2 दोनों।**

(13) **(C)** अवंती एक प्राचीन भारतीय महाजनपद था, जो लगभग वर्तमान मालवा क्षेत्र से मेल खाता था। बौद्ध पाठ्य के अनुसार अंगुत्तर , निकाय, अवंती छठी शताब्दी ई.पूर्व के सांत्वना महाजनपदों में से एक था। विंध्य द्वारा जनपद को 2 भागों में विभाजित किया गया था, उत्तरी भाग की राजधानी उज्जयिनी थी और दक्षिणी भाग का केंद्र माहिस्मती में था।

(14) **(C)** करुण मध्यप्रदेश का एक स्थानीय राजवंश था। उन्होंने रीवा नदी के पास बघेलखंड पर नियंत्रण स्थापित किया।
बघेलखंड क्षेत्र- म.प्र. के उत्तरी पूर्वी क्षेत्रों और दक्षिण-पूर्वी उत्तर प्रदेश के एक छोटे से क्षेत्र को सम्मलित करता है। यह उत्तर और पूर्व में भारत गंगा के मैदान, पश्चिम में बुंदेलखण्ड और दक्षिण में विंध्य पर्वत से घिरा हुआ है।

(15) **(D) हैहय बंश-** वर्तमान निमाड़ क्षेत्र की स्थापना करने वाले महान राजा ''यदु'' के पोते हैहय ने स्थापित किया। वंश के राजा महिष्मंत ने एक किले पर कब्जा कर लिया और इसका नाम महिष्मती (वर्तमान महेश्वर) रखा था।
वितिहोत्र वंश- हैहय वंश की शाखा थी। पुराणों के अनुसार, वितिहोत्र अर्जुन, कार्तवीर्य के प्रपौत्र और तलजंघाके ज्येष्ठ पुत्र थे।
प्रपोत्र वंश- यह प्राचनी भारतीय वंश था, जिसने वर्तमान म.प्र. राज्य के अवंती पर शासन किया था। वायू पुराण के अनुसार, अवंति प्रद्योत ने मगध पर कब्जा कर लिया था।

(16) **(A)** बुंदेलखंड और उसके आसपास के क्षेत्रों की राजधानी शक्तिमती है। पाली भाषा के बोद्ध ग्रंथों में, इसे सोलह महाजनपदों में एक रूप के रूप में सूचिबद्ध किया गया है। उन्होंने महाभारत युद्ध में पांडवों की तरफ से लड़ा था। महाभारत काल में, शिशुपाल चेदि का प्रसिद्ध राजा था जिसे भगवान कृष्ण ने मारा था।

(17) **(C) अंगुत्तर निकाय-** बोद्ध साहित्य जिसमें 600 ई. पूर्व के 16 महाजनपदों का विवरण दिया गया है। बोद्ध श्रोतों द्वारा दिए गए नाम- काशी, कोशल, अंग, मगध, वज्जि, मल्ल, चेदि, वत्स, कुरु, पांचाल, मत्सय, सुरसेन, अस्माका, अवंती, गांधार और कंबोज है।
भगवती सूत्र- यह जैन साहित्य है जिसमें 600 ई.पूर्व के 16 महाजनपदों का विवरण दिया है। कुछ महाजनपद बोद्ध साहित्य के अंगुत्तर निकाय से भिन्न है। लेकिन इतिहासकारों के अनुसार बोद्ध साहित्य की सूचि अधिक विश्वसनीय है।

(18) (A) कुतुबुद्दीन ऐबक (1206-1210) :- गोरी की मृत्यु पर, ऐबक ने अपनी स्वतंत्रता की घोषणा की और दिल्ली के प ास इंद्रप्रस्थ में अपना शासन स्थापित किया। उन्होंने गोरी साम्राज्य के साथ सभी संबंधी की सेवा की और गुलाम वंश के साथ-साथ दिल्ली सल्लतनत की स्थापना की। उन्होंने भारत के इतिहास में पहली 'सुल्तान' की उपाधि धारण की और दिल्ली को अपनी राजधानी बनाया। उन्हें उनकी उदारता के लिए 'लाख बख्श' या लाखों के दाता के रूप में भी जाना जाता था, क्योंकि उन्होंने बहुत उदार दान दिया था।

परमार्दिदेव- चंदेल शास थे।

(19) (B) तुगलक के बाद दिलावर खान गौरी ने मालवा में एक स्वतंत्र सल्तनत की स्थापना की। 1392 में, दिलावर खान ने अपनी स्वतंत्रता का दावा किया और उसे मालवा सल्तनत के नाम से जाना जाता है। उन्होंने धार को अपनी राजधानी चुना और बाद में इसे मांडू में स्थानांतरित कर दिया। मांडू का नाम बदलकर शादियाबाद (खुशी का शहर) कर दिया गया। उनके बेटे अल्प खान ने अपना नाम बदलकर होशंगाशाह रख लिया और होशंगाबाद की स्थापना की। होशंगशाह के पोते को जहर देकर मुहम्मद खिलजी गद्दी पर बैठा।

महमूद शाद- वह मालवा में खिलजी वंश के संस्थापक थे। उसका उत्तराधिकारी उसका पुत्र गयास-उद-दीन हुआ था।

मोहम्मद शाह द्वितिय- वह खिलजी वंश के अंतिम शासक थे। उन्होंने 1531 में गुजरात के सुल्तान बहादुर शाह के सामने आत्मसमर्पण कर दिया था।

शुजात खान- 1542 में, शेरशाह सूरी ने कादिर शाह को हराकर राज्य पर विजय प्राप्त की और शुजात खानक ो अपना गवर्नर नियुक्त किया।

(20) (C) 14वी शताब्दी में, सलैया और बटियागढ़ में मुस्लिम शासन के शिलालेखों में क्रमशः खिलजी और तुगलक को सुल्तानों के रूप में वर्णित किया गया था। खिजली का चंदेरी प्रांत का क्षेत्रिय प्रशासनिक केंद्र बटियगढ़ में था जिसे दमोह में स्थानांतरित कर दिया गया था। गयासुद्दीन तुगलक के गवर्नर ने दमोह में एक महल का निर्माण कराया, जैसा कि बटियागढ़ शिलालेख में दर्शाया गया है।

(21) (C) अंतिम गोंड रानी की मृत्यू के बाद दोस्त मोहम्मद खान ने अपना अवसर लिया और छोटे गोंड साम्राज्य को जब्त कर लिया। उन्होंने आधुनिक भोपाल से 10 किमी. दूर जगदीशपुर में अपनी राजधानी की स्थापना की थी। उन्होंने अपनी राजधानी का नाम इस्लाम नगर रखा था जिसका अर्थ है इस्लाम का शहर। बाद में, राजधानी को वर्तमान शहर भोपाल में स्थानांतरित कर दिया गया।

(22) (D) शेरशाह सूरी ने चौसा (1539) और कन्नोज (1540) में मुगल सम्राट हुमायूँ को हराया। उसने उत्तर भारत पर 5 साल तक शासन किया, मालवा पर कब्जा कर लिया और राजपूतों को हराया। मालवा के शासक ने हुमायूँ के साथ उसके संघर्ष में शेरशाह की मदद नहीं की थी इसीलिए, उसने मालवा पर हमला किया और उसके साम्राज्य पर अधिकार कर लिया। उसने रामसेन की एक रियासत पर आक्रमण किया और उसे घेर लिया।

(23) (A) 22 मई 1545 को महोला के राजपूतों के विरूद्ध कालिंजर किले की घोराबंदी के दौरान शेर शाह सूरी की हत्या कद दी गई। जब इस किले को कब्जे में करने की सभी रणनीति विफल हो गई, तो उसने किले की दीवारों को बारूद से उड़ाने का आदेश दिया लेकिन एक खदान के विस्फोट के परिणाम स्वरूप वह खुद गंभीर रूप से घायल हो गया। उसके पुत्र जलाल खां को उसका उत्तराधिकारी बनाया जिसने इस्लाम शाह सूरी की उपाधि धारण की।

(24) (B) मदन सिंह गढ़। गोंडवाना वंश के 34वे राजा थे। उन्होंने लगभग 1146 ई. तक शासन किया। उन्होंने जबलपुर में मदन महल का निर्माण कराया।

गोंडवाना वंश- गढ़मंडला/गोंडवाना की स्थापना 1320 में यादव राय ने की थी। महाकौशल क्षेत्र में वंश का शासन था। इस वंश के राजा में से एक 'संग्राम शाह' ने अपने क्षेत्र को 52 और किलों तक विस्तारित किया। 'दलपत शाह' संग्राम शाह के उत्तराधिकारी थे लेकिन कम उम्र में उनकी मृत्यू हो गई। दलपतशाह की पत्नि दुर्गावती ने आधार कायस्थ और मान ठाकुर की मदद से गढ़मंडला की देखभाल की, क्योंकि उनका बेटा नाबलिग था (वीर नारायण)।

(25) (A) गोहर बेगम (1819-1844)- इन्हें कुदसिया बेघम के नाम से भी जाना जाता है, 18 साल की उम्र में उनके पति नजूर खान का निधन हो गया। भोपाल की पहली महिला शासक थीं। परदाह व्यवस्था के खिलाफ थी। भोपाल में प्रसिद्ध जामा मस्जिद और गोहर महल का निर्माण किया।

(26) (A) भोजपुर शिव मंदिर को भोजेश्वर मंदिर के नाम से भी जाना जाता है। यह म.प्र. के भोजपुर गांव में एक अधुरा मंदिर है। इसके गर्वग्रह में 7.5 फीट ऊँचा शिवलिंग है। माना जाता है कि मंदिर का निर्माण 11वीं शताब्दी में परमार राजा भोज के शासनकाल के दौरान शुरू हुआ था। यह एक ही चट्टान से बना है।

(27) **(A) वाकाटक वंश** – इस वंश की उत्पत्ति दक्कन से हुई थी। राज्य का विस्तार मालवा के दक्षिणी किनारों और उत्तर में गुजरात से लेकर दक्षिण तुंगभद्रा नदी तक था। वे दक्कन में सातवाहनों के सबसे महत्वपूर्ण उत्तराधिकारी थे और उत्तर गुप्तों के समकालीन थे। 'प्रवरसेन प्रथम' पहला वाकातक शासक था जिसने खुद को सम्राठ कहा और नागाओं के साथ युद्ध किया।

नागा राजवंश (170-350 ई.)- इसकी स्थापना वृषनाथ ने 300 ईस्वी में वर्तमान विदिशा क्षेत्र में की थी। प्रारंभ में, उत्तर प्रदेश के मथुरा क्षेत्र पर नागा वंश का शासन था। नागा वंश के शासक गणपति नागा ने समुद्रगुप्त के खिलाफ लड़ाई लड़ी और समुद्रगुप्त को अपना राज्य खो दिया।

चंदेल राजवंश (835-1315 ई.) – शुरू में कन्नौज के गुर्जर प्रतिहारों के सामंत के रूप में शासन किया। नन्नुका ने महोबा में राजधानी के साथ बुंदेलखंड में चंदेल वंश की स्थापना की। उनके शासन काल में खजुराहों में प्रसिद्ध मंदिरों का निर्माण कराया गया था।

तोमर वंश (736-1152 ई.)- 1398 में तोमरस ने ग्वालियर पर लिया, इस राजवंश के 'राजा सूरज सेन' ने 'ग्वालियर किले' का निर्माण किया। सबसे उल्लेखनीय तोमर शासक ''मान सिंह तोमर (1486-1517)'' थे। उन्होंने म.प्र. में सास-बहू मंदिर और गुर्जरी महल का निर्माण कराया था। अंतिम शासक विक्रमादित्य को इब्राहिम लोदी ने पराजित किया, जिसने उससे ग्वालियर पर कब्जा कर लिया था।

(28) **(D) चरण पादुका गोलीबारी**- 14 जनवरी 1931 को भारत में ब्रिटिश शासन के दौरान हुआ था जिसके कारण पुरा नरसंहार हुआ था। चरण पादुका सत्याग्रह एक हिंसक अवसर था जिसे जलियावाला हत्याकांड कहा जाता है, भारतीय इतिहास में एक सुस्त दिन जहाँ ब्रिटिश शासन के खिलाफ कई असंतुष्टो को एक बंद माहौल में गोली मार दी गई थी। 14 जनवरी 1930 को छतरपुर शहर से 50 किमी. दूर चरण पादुका नामक स्थान पर शाही नियमों को चुनौती देने के लिए विशाल सभा आयोजित की गई थी। ब्रिटिश शक्तियों ने सभा को तितर-बितर कर दिया और विभिन्न व्यक्तियों की हत्या कर दी। शहीद होने वालों में पीपत के सेठ सुंदरलाल वरोहा, बंधैया के चिरू कुर्मी, हेलकाई अहीरव खिरवा के धर्मदास और गुना के रामलाल शामिल हैं।

(29) **(C)** कांग्रेस समिति का गठन 1920 में म.प्र. के रतलाम जिले में किया गया था। इस समिति के पहले अध्यक्ष मोहम्मद उमर खान थे। इसके परिणामस्वरूप, राजनीतिक प्रवृत्ति की भावना यहाँ के लोगों में प्रदर्शीत होने लगी थी। स्वामी ज्ञानानंद की प्रेरणा से राष्ट्रीय आंदोलन की शुरूआत हुई।

(30) **(B)** भारतीय कांग्रेस कमेटी द्वारा 9 अगस्त 1930 को जंगल सत्याग्रह प्रस्ताविक किया गया था। जंगल सत्याग्रह की शुरूआत म.प्र. में तुरिया (सिवनी) और घोड़ा डोंगरी (बैतुल) से हुई। बेतुल जंगल में सत्याग्रह का नेतृत्व बंजारी सिंह कोरकू के साथ गंजन सिंह कोरकू ने किया था।

(31) **(C)** यह नरसंहार वर्ष 1931 में छतरपुर क्षेत्र के चरण पादुका गांव में हुआ था। स्वतंत्रता सेनानी शांतिपूर्ण सभा के लिए एकत्र हुए थे जब कर्नल फिशर ने लोगों पर गोलियां चलाने का आदेश दिया। इस गोलीबारी में 6 स्वतंत्रता सेनानियों की मौत हो गई थी।

(32) **(A)** 1942 का भारत छोड़ो आंदोलन म.प्र. में विदिशा में शुरू हुआ था। 'विदिशा' नाम पास की नदी 'ब्यास' से प्राप्त हुआ है जिसका उल्लेख पुराणों में मिलता है। 1947 में भारत की स्वतंत्रता के बाद, ग्वालियर की पूर्व रियासत मध्य भारत राज्य का हिस्सा बन गई जिसका गठन 1948 में हुआ था।

(33) **(C) नीमच छावनी (3जून 1857)** :- म.प्र. में पहली क्रांतिकारी गतिविधि इसी क्षेत्र में हुई जहाँ पैदल सेना और घुड़सवार सेना ने मिलकर विद्रोह किया और छावनी में आग लगा दी। ब्रिटिश कर्नल सैनिक उनके विद्रोहों को नियंत्रित करने में विफल रहे।

ग्वालियर में विद्रोह (14 जून 1857)- मुरार कैंट के सैनिकों ने विद्रोह कर दिया और सभी संचार माध्यमों को काट दिया। रानी लक्ष्मीबाई ने तात्या टोपे के साथ मिलकर ग्वालियर को घेर लिया लेकिन सिंधिया की मदद से अंग्रेजों ने विद्रोह को कुचल दिया।

(34) **(B) जंगल सत्याग्रह (1930)**- जनजातियों ने जंगलों और अन्य संसाधनों पर अपने अधिकार की मांग की। उनके सत्याग्रहों में मुख्य रूप से 3 अपने प्रभावों के कारण बहुत महत्वपूर्ण है- सिवनी, तुरिया (सिवनी जिला), और छोरा-डूंगरी (बैतूल) तुरिया जंगल सत्याग्रह का नेतृत्व दुर्गा शंकर मेहता ने किया था। माच के दौरान आदिवासियों पर पुलिस ने गोलियां चलाई, जिसके परिणामस्वरूप तुरियां में 4 निर्दोष जनजातियों को गोली मारकर हत्या कर दी गई।

(35) **(B) झंडा सत्याग्रह (1923)**- भारत में झंडा सत्याग्रह पहली बार जबलपुर में शुरू हुआ था। इससे पहले असहयोग आंदोलन के दौरान कांग्रेस नेता अजमल खान और अन्य लोग जबलपुर पहुंचे और तिरंगा फहराया लेकिन जबलपुर की पुलिस को पैरों से कुचल दिया गया। घटना राष्ट्रीय स्तर पर लगती है राष्ट्रीय नेताओं ने ''झंडा सत्याग्रह'' मनाने का फेसला किया इस बार सत्याग्रह की शुरूआत 13 अप्रैल 1923 को नागपुर से हुई थी। इस बार जबलपुर में राजगोपालाचारी, राजेंद प्रसाद और देवदास गांधी ने सत्याग्रह का नेतृत्व किया,

सुंदरलाल को 6 माह की कैद हुई। इस बार सरोजिनी नायडू और मौलाना आजाद भी जबलपुर और अन्य स्थानीय नेताओं से टाउन हॉल में सफलतापुर्वक तिरंगे का अनावरण करने पहुंचे।

(36) (C) पंजाब मेल नरसंहार (23 जुलाई 19631)- वीर यशवंत सिंह (दमोह), देवनारायण तिवारी और दलपत राव ने खंडवा रेलवे स्टेशन पर हमला किया और हेक्सल को मार डाला। जिसके बाद 10 अगस्त 1931 को मामले को खंडवा न्यायालय में पेश किया गया और 11 दिसंबर 1931 को यशवंत सिंह और देव नारायण तिवारी की मौत की सजा दी गई और दलपत राव को कालापानी की सजा सुनाई गई।

(37) (C) रतौना सत्याग्रह (1920) - सागर के पास रतौना नामक स्थान पर बूचड़खाने के खिलाफ आंदोलन को असहयोग के सिद्धांतों पर आधारित इस क्षेत्र का पहला आंदोलन कहा जा सकता है। उन दिनों ब्रिटिश कंपनी ने रतौना में एक बूचड़खाना खोला था। प्रतिदिन बड़ी संख्या में गायों और बैलों की हत्या की जाती थी। बूचड़खाने को बंद करने के लिए एक आंदोलन समिति का गठन किया गया था।

(38) (B) नीमच छावनी- म.प्र. में पहली क्रांतिकारी गतिविधि नीमच छावनी क्षेत्र में हुई जहाँ पैदल सेनिक और घुड़सवार सेना में मिलकर विद्रोह किया और आग लगा दी। ब्रिटिश सैनिक अपने विद्रोहों को नियंत्रित करने में विफल रहे। वास्तव में नीमच में देशी बंगाल ब्रिगेड जिसने बाद में विद्रोह किया, वह दिल्ली की ओर कूच कर गई।

(39) (A) तांत्या भील- तांत्या भील का जन्म 1842 में निरी (खरगोन के पास) गांव में हुआ था। उन्होंने 1857 के प्रथम स्वतंत्रता संग्राम में भाग लिया। उन्हें एक साजिश के तहत गिरफ्तार किया गया और 1888 में उन्हें फांसी दे दी गई।

(40) अवंतीबाई- रामगढ़ (मंडला) की शासक थीं। उन्होंने विद्रोह किया और ब्रिटिश निवासी बार्डन को हराया। बार्डन को गिरफ्तार कर लिया गया लेकिन रानी ने रीवा राज्य की सहायता से उसे भागने के लिए क्षमा कर दिया, बार्डन ने दिसंबर 1857 को रामगढ़ पर हमला किया। कमांडर बार्डन ने अवंतीबाई को जंगल में घेर लिया। एक भीषण युद्ध के बाद, रानी अवंतीबाई ने आत्महत्या कर ली, जबकि उनके अंगरक्षक गिरधारी बाई ने भी ऐसा ही किया।

(41) (B) राजा ठाकुर प्रसाद- वह एक किशोर राजा था जिसने राघवगढ़ में विद्रोह किया था। उन्हें आजीवन कारावास की सजा सुनाई गई थी।

(42) (D) मुरार छावनी- इसे ग्वालियर विद्रोह भी कहा जाता है। मुरार छावनी के सैनिकों ने विद्रोह कर दिया और सभी संचार चैनलों को काट दिया 14 जून 1857 को आयोजित किया गया था। रानी लक्ष्मीबाई ने तात्या टोपे के साथ मिलकर ग्वालियर को घेर लिया लेकिन सिंधिया की मदद से अंग्रेजों ने विद्रोह को कुचल दिया। रानी लक्ष्मी बाई ने बहादुरी से लड़ाई लड़ी लेकिन काल्पी के पास घायल हो गई जब जनरल ह्यूग ने फंसा लिया।

(43) (C) शेख रमज़ान- उन्होंने सागर छावनी में सैनिक विद्रोह का नेतृत्व किया लेकिन अंग्रेजों ने उसे दबा दिया। इसे सागर विद्रोह भी कहा जाता है।

सआदन खान- एक सैनिक सआदत खान ने अंग्रेजी के खिलाफ सैनिक का नेतृत्व किया। वह महू में है। अंगेज हा गए और उनके अधिकारी सीहोर चले गए।

भीमा नायक- उन्होंने मंडलेश्वर के पास आदिवासी विद्रोह का नेतृत्व किया। सैनिकों और घुड़सवार सेना के केंद्रिय जेल पर हमला किया और कप्तान बेंसामिन हेब्स को मार डाला, उनका कब्जा 2 साल तक जारी रहा।

(44) (D) मधुकर शाह, जवाहर सिंह बुंदेला और ढिल्लन शाहा ने ब्रिटिश नीतियों, हस्तक्षेप और शोषण के खिलाफ विद्रोह किया। विद्रोह वुरे सागर, दमोह, मंडला, जबलपुर आदि में फैल गया, लेकिन ठीक से संगठित और समन्वित नहीं हुआ और इसलिए अंग्रेजों द्वारा आसानी से दबा दिया गया। इसे 1842 के बुंदेला विद्रोह के रूप में भी जाना जाता है।

(45) (A) केवल (1)

(46) (B) आपानी भोंसले- राज्य का पहला विद्रोह अप्पाजी भोंसले द्वारा किया गया विद्रोह माना जाता है। वास्तव में, अंग्रेजों ने आपाजी भोंसले को कुछ क्षेत्रिय क्षेत्रों जैसे मंडला, बैतूल, छिंदवाडा, सिवनी और नर्मदा घाटी के कुछ हिस्सों को आत्मसमपर्ण करने के लिए मजबूर किया। अरब सैनिकों की मदद से आपाजी ने 1818 में मुल्ताई की लड़ाई में अंग्रेजों से लड़ाई लड़ी लेकिन आपाजी हार गए और उन्हें भागना पड़ा।

(47) (C) आपाजी भोंसले- वह नागपुर राज्य के अपदस्थ सैनिक थे। आपाजी ने अंग्रेजों के साथ एक संधि पर हस्ताक्षर किए जिसमें वह सहायक गठबंधन की तुलना में सख्त शर्तों से बंधे थे। गवर्नर जनरल द्वारा संधि की पुष्टि की गई। उसके बाद महाकौशल क्षेत्र में कई विद्रोह हुए।

(48) (B) तात्या भील ने खरगाँव से 1857 के महान विद्रोह में भाग लिया।

(49) (A) कैलाश नाथ काटजू का जन्म 17 जून 1887 को जावरा रियासत में हुआ था। डॉ. कैलाश नाथ काटजू दो बार म.प्र. के मुख्यमंत्री रहे। उनका पहला कार्यकाल 31 जनवरी 1957 से 14 अप्रेल 1957 तक और दूसरा कार्यकाल 15 अप्रैल 1957 से 11 मार्च 1962 तक था। वह उड़ीसा और पश्चिम बंगाल के राज्यपाल, केंद्रिय ग्रह मंत्री और केंद्रिय रक्षा मंत्री थे। स्वतंत्रता संग्राम के दौरान एक प्रमुख वकील, उन्होंने विवादस्पद मामलों में कई राजनीतिक कैदियों का बचाव किया।

50. (C)

टांटया भील का जन्म 1842 में पूर्वी निमाड़ (खण्डवा जिला) म.प्र. में हुआ था। उन्हें प्यार से टांटया मामा के नाम से भी पुकारा जाता था। उन्होंने 15 साल की उम्र में 1857 में महान विद्रोह में भाग लिया था। वे गोरिल्ला युद्ध में उत्कृष्ट थे। कुछ भरोसेमंद लोगों के विश्वासघात के कारण उन्हें अंग्रजों द्वारा गिरफ्तार कर लिया गया। उन्हें 4 दिसंबर 1889 को फांसी पर लटका दिया गया।

51. (B) कुंवर चैन सिंह-

राजगढ़ में एक शहर नरसिंहगढ़ के राजकुमार थे। उन्होंने और उनके साथियों हिम्मत खान और बहादुर खान और 43 सैनिकों ने 24 जुलाई 1824 को अंग्रजों के खिलाफ विद्रोह कर दिया। विद्रोह सीहोर की लोटिया नदी के तट पर हुआ। उन्होंने 24 साल की उम्र में अंग्रजों से बहादुरी से लड़ते हुए शहादत प्राप्त की। वह पहले शहीद थे जिन्होंने म.प्र. में अंग्रजों के खिलाफ विद्रोह किया।

52. (C)

भीमा नायक का जन्म 1840 में बड़वानी जिले के पंच मोहाली गांव में हुआ था। उन्हें निमाड़ के रॉबिन के रूप में जाना जाता है क्योंकि उन्होंने विभिन्न जमींदारों के खिलाफ विद्रोह किया और गरीब लोगों को धन वितरित किया। उन्होंने तात्या टोपे से मिलने के बाद निमाड़ क्षेत्र में 1857 के महान विद्रोह की शुरुआत की। उन्होंने तीर कमान बटालिमन का नेतृत्य किया और अंबापानी में अंग्रेजों को हराया। उन्हें 1888 में अंग्रजों ने पकड़ लिया और अंडमान की सेलूलर जेल भेज दिया और 1876 में उन्हें फांसी दे दी गई।

53. (B)

रविशंकर शुक्ल भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के नेता थे और एक भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन के कार्यकर्ता थे। उनका जन्म 2 अगस्त 1877 को सागर जिले में हुआ था। वे 1 नवंबर 1956 से 31 दिसंबर 1956 को अपनी मृत्यु तक पुनर्गठित राज्य के पहले मुख्यमंत्री थे। 31 दिसंबर 1956 को उनका निधन हो गया।

54. (A)

मोहम्मद बरकतुल्लाह भोपाली को मौलाना बरकतुल्लाह के नाम से जाना जाता है। वे भोपाल .म.प्र. के एक भारतीय क्रांतिकारी थी और उन्होंने भारत की अंतरिम सरकार के प्रधानमंत्री के रूप में कार्य किया। उन्होंने विदेश से अपनी क्रांतिकारी गतिविधियों को उम्र भाषणों के साथ अंजाम दिया।

55. (B)

चंद्रशेखर आजाद का जन्म 23 जुलाई 1906 को म.प्र. के अलीराजपुर के भामरा गांव में हुआ था। वह 1925 की काकोरी ट्रेन डकैती में शामिल थे। उन्होंने रामप्रसाद बिस्मिल की मृत्यु के बाद 1928 में हिन्दुस्तान रिपब्लिकन एसोसिएशन (HRA) को उसके नाम हिन्दुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन एसोसिएशन (HSRA) के तहत पुनर्गठित किया। उन्होंने 27 फरवरी 1931 को पुलिस के साथ लंबी गोलीबारी के बाद खुद को गोली मार ली।

56. (C)

माखनलाल चतुर्वेदी का जन्म म.प्र. के होशंगाबाद जिले में बाबई नामक स्थान पर हुआ था। उनके पिता का नाम नंदलाल चतुर्वेदी था जो गांव के प्राथमिक विद्यालय में शिक्षक थे। वे एक प्रसिद्ध कवि, लेखक और पत्रकार थे। जिनकी रचनाएँ बहुत लोकप्रिय हुई। 'प्रभा' और 'कर्मवीर' जैसे प्रतिष्ठित पत्रों के संपादक के रूप में, उन्होंने ब्रिटिश शासन के खिलाफ जोरदार अभियान चलाया। उन्हें ब्रिटिश शज के दौरान असहयोग आंदोलन और भारत छोड़ो आंदोलनों में उनके योगदान के लिए विशेष रूप से याद किया जाता है।

57. (B)

डा. भीमराव रामजी अंबेडकर का 14 अप्रैल 1981 को म.प्र. के महू में हुआ था। वे दलित वर्गों में शिक्षा के प्रचार-प्रसार के लिए काम करते थे। उन्होंने जुलाई 1942 में अनुसूचित जाति संघ और इंडियन लेबर पार्टी की स्थापना की। उन्हें प्रारूप समिति के अध्यक्ष के रूप

मे नियुक्त किया गया था। उन्हें भारतीय संविधान का पिता कहा जाता है। उन्हें 1990 में मरणोंपरांत भारत रत्न से सम्मानित किया गया था।

58. (D) विंध्य प्रदेश-

बुंदेलखण्ड के कुछ हिस्से और बघेलखण्ड के कुछ हिस्से शामिल थे। तो, रीवा और सतना की रियासत बघेलखण्ड के अंतर्गत आती है और पन्ना बुंदेलखण्ड के अंतर्गत आती है। "गठन-मार्च 1948" राज्य के प्रमुख- 'महाराजा मार्तंड सिंह जुदेव'। प्रारंभ इसे दो अलग-अलग प्रशासनिक इकाइयों के तहत प्रशासित किया गया था-

रीवा (बघेलखण्ड)- कैप्टन अवधेश प्रताप सिह

बुंदेलखण्ड- कामता प्रसाद सकसेना।

59. (A) भाग- A

पहला भाग-A प्रांथ था, जिसमें ब्रिटिश भारत के सभी प्रांत शामिल थे। स्वतंत्रता के बाद किए गए राज्यों के वर्गीकरण में म.प्र. राज्य का गठन सीपी और बरार में महाकौशल और छत्तीसगढ़ की रियासतों को मिलाकर किया गया था। इसकी राजधानी नागपुर में रखी गई थी।

60. (A) भोपाल-

अंग्रेजों के भारत छोड़ने के बाद भोपाल एक केंद्र शासित प्रदेश बन गया। 1 जून 1949 को भारत छोड़कर सरकार ने इसे अपने नियंत्रण में ले लिया। एन.बी.बनर्जी के मुख्य आयुक्त के रूप मं नियुक्त किया गया था। 1952 में जनता के चुने हुए प्रतिनिधियों ने भोपाल का शासन संभाला। मुख्यमंत्री डॉ.शंकर दयाल शर्मा मुख्यमंत्री बने। भोपाल जिले राज्य को दो जिलों रायसेन और सीहोर में विभाजित किया गया था।

61. (B) मध्य भारत-

यह स्वतंत्रता के बाद 600 राज्यों के स्कीकरण में भी था। 22 अप्रैल 1948 को इस राज्य की 22 रियासतों के राजाओं ने इस समझौते पर हस्ताक्षर किए। ग्वालियर और इंदौर को संयुक्त राजधानी बनाया गया। साढ़े छह महीने के लिए ग्वालियर और साढ़े पाँच महीने के लिए इंदौर राजधानी थी।

62. (A) बघेलखण्ड और बुंदेलखण्ड-

बघेलखण्ड का इतिहास विक्रम संवत 1234 से शुरू होता है, जब गुजरात के सोलंकी राजा व्याघ्रदेव रीवा आए और बघेल राज्य की नींव रखी। बघेलखंड की भूमि में रीवा, सोहावल, कोटि, नगोड़ा और मैहर राज्य शामिल थे। 1947 में भारत की स्वतंत्रता के बाद, बुंदेलखण्ड और बघेलखण्ड की 35 रियासतों ने मार्च 1948 में संयुक्त राज्य विंध्य प्रदेश बनाने के लिए संकल्प पत्र पर हस्ताक्षर किए।

63. (B)

इसमें ग्वालियर और इंदौर की 25 रियासतें शामिल थीं। यह भी एमपी का हिस्सा बन गया। "सुनेल टप्पा" को छोड़कर जो भानपुरा तहसील, जिला मंदसौर की उपन्तहसील थी, और राजस्थान को सौंप दी गई थी। शेष म.प्र. को म.प्र. में मिला दिया गया है। सिरोंज तहसील क्षेत्र तोंक नवाब के अधीन शासित था। 1956 में सिरोंज को म.प्र. सौंप दिया। अलीराजपुर जिले में जोबट मध्य भारत का हिस्सा थां

64. (A) मध्य प्रांत (बरार)-

इसमें छत्तीसगढ़, विदर्भ क्षेत्र और शामिल वर्तमान महाकौशल है। गठन-1947

मध्यभारत- ग्वालियर और इंदौर की 25 शामिल रियासतें हैं।

विंध्य भारत- इसमें बुंदेलखण्ड और बघेलखण्ड के कुछ हिस्से शामिल थे।

गठन-मार्च 1948

भोपाल- प्रारंभिक विरोध के बाद नवाब हमीदुल्लाह खान ने अंततः अपने राज्य "भोपाल" को भारत में विलम कर दिया।

65. (D)

विंध्य प्रदेश का पूर्व राज्य 12 मार्च 1948 को बनाया गया था और 4 अप्रैल 1948 को स्थापित किया गया था। इस क्षेत्र का नाम विंध्य पर्वत श्रंखला के नाम पर रखा गया था जो कि पूर्व भारतीय राज्य के आंतरिक भाग और पश्चिम में दतिया राज्य की राजधानी से होकर गुजराती है।

66. (C)

मध्य प्रांत बना म.प्र. का हिस्सा 8 जिलों के विदर्भ क्षेत्र को छोड़कर जिन्हें मुम्बई राज्य को सौंपे गए वर्तमान में महाराष्ट्र है। मध्यभारत भी बना म.प्र. का हिस्सा 'सुनेल टप्पा' को छोड़कर शेष मध्य भारत को म.प्र. में मिला दिया गया है।

सिरोंज तहसील क्षेत्र टौक नवाब (टौक राजस्थान में एक रियासत थी) के अधीन शासित था। 1956 में सिरोंज को म.प्र. (जिला विदिशा में एक तहसील बनें)।

67. (D) केवल एक (1) सही है।

68. (D)

उदमगिरि गुफाएँ विदिशा, म.प्र. के पास 5वी शताब्दी ई. के प्रारंभिक वर्षों से बीस चट्टानों को बांटकर बनाई गई गुफाएं। इनमें भारत के कुछ सबसे पुराने जीवित हिंदू मंदिर और प्रतिमाएं शामिल हैं। उदयगिरि की गुफाओं में वैष्णववाद, शक्तिवाद, और शैववाद की प्रतिमाएं हैं। हिंदू और जैन धर्म की 20 गुफाएं हैं। जैन गुफा 425 ई से सबसे पुराने ज्ञात जैन शिलालेखों में से एक के लिए उल्लेखनीय है, जबकि हिंदू गुफाओं में ई. से शिलालेख हैं। वे एकमात्र स्थल है जो चंद्रगुप्त द्वितीय और कुमारगुप्त प्रथम के शासनकाल से संबंधित शिलालेखों से गुप्त गुप्तकाल के सम्राट के साथ सामापित रूप से जुड़े हो सकते हैं।

69. (A)

मृगेंद्र नाथ की गुफाएं म.प्र. के रायसेन जिले पाई जा सकती है। ये गुफाएँ म.प्र. के रायसेन जिले के पाटनी गाँव में स्थित है। उन्हें 2009 में म.प्र. के पुरातत्व विभाग द्वारा खोजा गया था। इन गुफाओं में भीमबेटका की गुफाओं के साथ समानताएँ हैं। भीमबेटका की गुफाओं म.प्र. के रायसेन जिले स्थित है। भीमबेटका की गुफाओं को 2003 में यूनेस्को द्वारा विश्व विरासत स्थल का दर्जा दिया गया था।

70. (B) ओंकारेश्वर मंदिर-

यह एक हिंदू मंदिर है जो भगवान शिव को स्थापित है। यह शिव के 12 श्रेद्धय ज्योतिर्लिंग मंदिरों में से एक है। यह म.प्र. के खंडवा जिले में नर्मदा नदी में स्थित है। भगवान शिव के ज्योतिर्लिंग में चौथा ओंकारेश्वर है। ओंकार का उच्चारण सर्वप्रथम स ृष्टिकर्ता ब्रह्म के मुख से हुआ।

71. (A)

भारत में 12 ज्योतिर्लिंग मंदिर है। जिनमें से 2 म.प्र. में स्थित है।

उज्जैन में महाकालेश्वर जयोतिर्लिंग है।

ओंकारेश्वर में ओंकारेश्वर मंदिर खंडवा में है।

दक्षिणतम ज्योतिर्लिंग मंदिर तमिलनाडू में स्थित है। 'रामनाथस्वामी' मंदिर भारत का सबसे दक्षिणी ज्योतिर्लिंग मंदिर है।

72. (A)

म.प्र. के उज्जैन जिले में 'बिना नींव की मस्जिद' नामक एक मस्जिद स्थित है। इसे मालवा के दिलावर खान घूरी ने बनवाया था। दिलावर खान घूरी मालवा सल्तनत के संस्थापक थे। इस मस्जिद को 'जामा अल्तमिश' भी कहा जाता है।

73. (D) कांच मंदिर-

यह इंदौर में एक जैन मंदिर है। यह पूरी तरह से काच और दर्पण (बहुरंगी) से बना है। इस अद्भुद मंदिर का निर्माण 20वी शताब्दी में किया गया था। यह कपास के एक लोकप्रिय व्यापारी सेठ हुकुमचंद द्वारा बनाया गया था। मंदिर में एक विशेष कक्ष के अंदर भगवान महावीर की तीन मूर्तियाँ हैं।

74. (A)

विराटेश्वर मंदिर म.प्र. के शहडोल जिले में स्थित है। प्राचीन विराटेश्वर मंदिर भगवान शिव को समर्पित है। इस मंदिर की भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण (ASI) स्मारक संख्या M-MP-255 है। भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण (ASI) डेटाबेस में इसे "विरथ मंदिर और अवशेष" के रूप में उल्लेख किया गया है। कलचुरी वंश के महाराजा युवराज देव द्वारा 10वीं और 11वीं शताब्दी निर्मित, यह अपने धार्मिक और ऐतिहासिक महत्व के लिए जाना जाता है। विभिन्न देवताओं की सुंदर मूर्तियों से सजी एक अलंकत संरचना, मंदिर कलचुरी वास्तुकला का एक उत्कृष्ट नमूना है।

75. (C) द्रविड़ शैली-

चोल वंश के दौरान मंदिर बनाने की द्रविड़ शैली विकसित की गई थी। इसमें मंदिरों चहारदीवारी काफी उँची रहती है। द्रविड़ वास्तुकला में, मुख्य मंदिर में केवल एक विमान होता है, जबकि सहायक मंदिरों में एक भी विमान नहीं होता है।

वेसर शैली- मंदिर बनाने की वेसर शैली का विकास चालुक्य और राष्ट्रकूट वंश के दौरान हुआ। यह नागर और द्रविड़ की एक संस्कृत शैली है। उदा.- ऐहोल का लड़खाना मंदिर।

नागर शैली- चंदेल राजवंश के दौरान मंदिर बनाने की नागर शैली विकसित हुई थी। इस मंदिर वास्तुकला में तीन कक्ष थे जिनके नाम गर्भग्रह, मंडप और अर्ध-मंडप है। उदा.- खजुराहो का लक्ष्मण मंदिर होयसल शैली-होयसल वंश के दौरान मंदिर बनाने की होयसल शैली विकसित की गई थी। मंदिरों को तारे के आकार में बनाया गया है।

76. (D)

पशुपतिनाथ मंदिर मंदसौर, म.प्र. में स्थित है। यह भगवान शिव मंदिर है जिसमें 8 मुख वाले शिव लिंग है। यह शिवना नदी के पास स्थित है।

77. (B) झिंगुरदा मंदिर-

झिंगुरदा मंदिर म.प्र. और उ.प्र. सीमा पर स्थित है। यह सिंगरौली जिले के पास झिंगुरदा में ओड़ी पहाड़ियों में स्थित है। यह मंदिर भगवान हनुमान का जन्म यहीं हुआ था। यह 200 साल पुरानी दक्षिण-भारतीय शैली में सिंगरौली राजघराना द्वारा बनाया गया था।

78. (A)

गुर्जर प्रतिहार राजवंश एक शाही शक्ति थी जिसने 8वीं से 11वीं शताब्दी के मध्य तक पश्चिमी भारत पर शासन किया था। हरिश्चंद्र ने गुर्जर प्रतिहार वंश की स्थापना की। नागभटट-I को गुर्जर-प्रतिहार वंश का वास्तविक संस्थापक माना जाता है। वह राजवंश के पहले महत्वपूर्ण राजा थे और उनकी उपलब्धियों के कारण जिसमें अरबों की पराज्य भी शामिल थी। उन्होंने शब्दकूटों के खिलाफ लड़ाई लड़ी हालांकि असफल रहे। ग्वालियर शिलालेख में गुर्जर-प्रतिहार वंश के प्रारंभिक इतिहास का उल्लेख है।

शिलालेख की स्थापना 7वीं शताब्दी में राजा भोज प्रथम ने की थी। वह गुर्जर प्रतिहार वंश के सबसे प्रसिद्ध राजा थे।

79. (C)

नन्नुक भारत के चंदेल वंश के संस्थापक थे। उन्होंने जेजाकभुक्ति क्षेत्र (वर्तमान म.प्र. में बुंदेलखण्ड) में शासन किया। चंदेलों के बारे में काव्य गाथाओं में नन्नुक का बिल्कुल भी उल्लेख नहीं है, और इसके बजाए चंदेल वंश के संस्थापक के रूप में "चंद्रवर्मन" का नाम दिया गया है। चंदेल वंश के संस्थापक नन्नुक एक छोटे से राज्य का शासक थे। अभिलेखों के अनुसार वह 9वीं शताब्दी के पुर्वार्द्ध में अपने कुल का मुखिया था।

80. (C)

इसकी स्थापना 9वीं और 10वीं शताब्दी ईस्वी के दौरान हुई थी। इसको स्थापना उपेंद्र ने की थी। परमार वंश की राजधानी धार में थी। परमार वंश का सबसे अधिक शासित क्षेत्र म.प्र. राज्य का मालवा, खानदेश, कोंकण, चित्तौड़ आदि क्षेत्र था। इस वंश का प्रथम स्वतंत्र और शक्तिशाली प्रासक श्रीशाह था। इस वंश ने अपनों क्षेत्र दक्षिण में ताप्ती नदी तक फेलाया। राजा भोज इस वंश के प्रसिद्ध शासकों में से एक थे। वह भोपाल के संस्थापक थे। राजा भोज ने धार में सरस्वती मंदिर का निर्माण कराया।

81. (A)

कलचुरी वंश की म.प्र. में 2 शाखाएं हैं-

1. महेशमती शाखा- (I) कृष्णराज-कृष्णराज पहला शासक था जिसने 550 से 575 ईसा तक शासन किया था। उसने तांबा और चांदी के सिक्के जारी किए। उसके चांदी के सिक्के जारी किए। उसके चांदी के सिक्के बेसनगर, तेवर और पट्टन से मिले थे।

शंकर गण- शंकर गण महेशमती के कलचुरी वंश के शासक के वह राजा कृष्णराज का पुत्र था। उसने 575 से 600 ईसा तक शासन किया। उनके दो ताम्रपत्र शिलालेख म.प्र. में मिलता है।

अमन से प्रथम

सांईखेड़ा से द्वितीय

बुद्धराज- बुद्धराज शंकरगण के पुत्र थे। उन्होंने 600 से 620 ईस्वी तक शासन किया। वह कलचुरी की महेशमती शाखा के अंतिम शासक थे।

82. (B)

ग्वालियर के तोमर एक राजवंश था जिसने ग्वालियर किले और उसके आस-पास के क्षेत्र पर मध्य भारत में शासन किया था। वे शुरु में दिल्ली सल्तनत के तुगलक वंश के सामंत थे। उन्होंने 1390 के दशक में अपना स्वतंत्रता राज्य स्थापित किया। ग्वालियर का सबसे पहला तोमर शासक वीरसिंह देव था। 16वीं शताब्दी मे इब्राहिम लोदी ने उन्हें हराया।

83. (A)

परिव्राजक वंश- परिव्राजक वंश ने 5वीं और 6वीं शताब्दी के दौरान मध्य भारत के कुछ हिस्से पर शासन किया। इस राजवंश के राजाओं ने महाराजा की उपाधि धारण की और संमवतः गुप्त साम्राज्य के सामंतों के रूप में शासन किया। राजवंश अपने दो राजाओं के शिलालेखों से जाना जाता हैः हस्तिन और संक्षोभ।

बुंदेलखंड के चंदेल- चंदेल या चंदेल मध्य भारत में एक राजपूत वंश हौ। कहा जाता है कि चंदेल शब्द चंद्रत्रेय से विकसित हुआ है जो अनुवांशिकता को प्रदर्शित करने वाले दो शब्दों का मिश्रण है, चंद्र वंश और अत्रय गोत्र।

गोण्डवाना साम्राज्य- ऐतिहासिक रूप से दर्ज पहला गोण्ड राज्य 14वीं और 15वीं शताब्दी ईस्वी के मध्य भारत के पहाड़ी क्षेत्र में आया था। इस राजवंश के सबसे प्रसिद्ध शासकों में प्रतिष्ठित रानी, रानी दुर्गावती जिनका गोंड समुदाय सामान करता है और हिरदे शाह, इस्लाम अपनाने वाले पहले गोंड राजा थे।

84. (A)

परिव्राजक वंश का बुंदेलखण्ड क्षेत्र पर अपना अधिकार था। उन्होंने म.प्र. पन्ना क्षेत्र पर शासन किया था। इस राजवंश ने लगभग 5वीं और 6वीं शताब्दी तक शासन किया। वे गुप्त वंश के सामंत थे।

85. (A) राजा मुंजा-

वह 9वीं शताब्दी की शुरुआत में परमार राजवंश के शासक थे। वह कवियों और विद्धानों के संरक्षक और स्वयं एक महान कवि थे। राजा मुंजा के समय में, वर्तमान म.प्र. में मालवा क्षेत्र मुख्य परमार क्षेत्र बन गया था, जिसकी राजधानी धारोट (धार) थी। उन्होंने चालुक्य राजा तैलप द्वितीय को 16 बार हराया था लेकिन 17वे हमले में पराजित कब्जा कर लिया गया और उसे मार दिया गया। यह राज्यवंश मुंजा के भतीजे भोज के शासनकाल में अपने शिखर पर पहुंच गया, जिसका राज्य उत्तर में चित्तौड़ से लेकर दक्षिण में कोंकण तक और पश्चिम में साबरमती नदी से पूर्व में विदिशा तक फैला था।

86. (A) होशंग शाह-

चह गोरी राजवंश के पहले स्वतंत्र शासक थे। वह मालवा का दूसरा सुल्तान था। एक राजवंश जिसने 1401 से 1531 के बीच मांडू पर शासन किया था। होशंगशा की उपाधि लेने से पहले उन्हें अल्प खान के नाम से जाना जाता था। वह दिलावर खान गोरी के पुत्र थे, जो दिल्ली के सुल्तान फिरोज शाह तुगलक के दरबारी सदस्य थे।

87. (C)

1305 ई. में अलाउद्दीन खिलजी ने मालवा पर आक्रमण करने के लिए मुल्तान गर्वनर ऐन-उल-मुल्क को भेजा, जो उसके अभियान में विजयी हो गया। इसी घटना से मालवा को दिल्ली सल्तनत में शामिल किया जाने लगा। सुल्तान अलाउद्दीन खिलजी मालवा पहुंचने और उस पर शासन करने वाला पहला व्यक्ति था। तब तुगलक सत्ता में आए और कुछ समय के लिए इस क्षेत्र पर शासन किया। 1305 से मालवा राजधानी धार के साथ तुगलक वंश के नियंत्रण में था 1401 में दिलावर खान और उनके बेटे अल्प खान ने खुद को स्वतंत्र घोषित किया और एक राजवंश की शुरुआत को चिह्नित किया।

88. (A)

पूर्ण चंद्रोदय- इस सप्ताहिक की शुरुवात 9 नवंबर 1880 को इंदौर में हुई थी। इसकी शुरुआत श्री रामचंद्र भाऊ साहब ने की थी। यह एक मराठी साप्ताहिक समाचार पत्र था। इसके संपादक वासुदेव बल्लार मुंडे थे।

जबलपुर समाचार-यह जबलपुर का पहला समाचार पत्र था जो 1 मार्च 1873 को प्रकाशित हुआ था यह हिंदी और अंग्रजी भाषा में प्रकाशित होने वाला एक द्विभाषी समाचार पत्र था।

शुभचिंतक- समाचार पत्र की शुरुआत वर्ष 1883 में हुई थी। इसके संपादक रघुवर प्रसार द्विवेदी थे।

सरस्वती विलास- 1884 में नरसिंहपुर में अखबार की शुरुआत हुई। श्री नन्हेलाल इसके संपादक थे।

89. (B) ग्वालियर समाचार पत्र-

इसकी शुरुआत 1852 में हुई थी। ग्वालियर के सिंधिया को समाचार सुनने का शौक था। उच्च रूचि और अनुमति के कारण ग्वालियर में अलीजा दरबार प्रेस की स्थापना की गई। इस प्रेस से साप्ताहिक समाचार पत्र ग्वालियर का प्रकाशन वर्ष 1852 में शुरु हुआ। यह अखबार प्रत्येक रविवार को हिंदी और उर्दू भाषा में प्रकाशित होता था।

90. (B)

भारत और म.प्र. में पत्रकारिता- 29 जनवरी 1780 को जेम्स ऑगस्टस हिक्की ने हिक्की का बंगाल गजट शुरु किया। भारत में पत्रकारिता की शुरुआत के 69 साल बाद म.प्र. में पत्रकारिता का युग पंडित धर्मनारायण के संपादन के तहत इंदौर में होल्कर रियासत के प्रिंटिंग प्रेस से 6 मार्च 1849 को मालवा समाचार पत्र के प्रकाशन के साथ शुरु हुआ।

91. (A)

इंदौर समाचार- अखबार की शुरुआत 22 मार्च 1946 को हुई थी। इसका प्रकाशन इंदौर में संपादक पुरषोत्तम विजय के नेत ृत्व में शुरु हुआ। यह मालवा का पहला व्यवस्थित समाचार पत्र बन गया।

भास्कर- यह एक साप्ताहिक था जो 1946 को रीवा में शुरु हुआ था। संपादक- पं. शंभुनाथ शुक्ल।

क्रांति- शुरुआत 2 अक्टूबर 1946 को इंदौर में हुई थी। शुरुआत कालिका प्रसाद दीक्षित 'कुसुमाकर' ने की थी।

युगारंभ- इसकी शुरुआत त्यौहार राजेंद्र सिंह ने की थी।

संपादक- पदुमनलाल पुन्नालाल बख्शी थे।

92. (D)

माच म.प्र. के मालवा क्षेत्र में लोक रंगमंच का एक रूप है। य केवल भाषण के उपयोग के साथ गाया जाने वाला नाटक है। नाटक की पृष्ठभूमि पर्दे द्वारा सेट की गई है और नर्तक आमतौर पर गायकों से दुगुने होते हैं।

म.प्र. के अन्य नृत्य- मचा, लोटा, पण्डतन, तेरताली, चरकूला, जावरा, मटकी नृत्य, फूलपत्ती नृत्य, मृिदा नृत्य, गौर मारिया।

93. (C)

48वां खजुराहो नृत्य महोत्सव 20-26 फरवरी 2022 के बीच खजुराहो, म.प्र. में आयोजित किया गया। इसका आयोजन आजादी का अमृत महोत्सव की विषय पर किया जा रहा है। इस आयोजन के दौरान वर्ष 2019-20 और 2020-21 के लिए प्रख्यात नर्तकों को राष्ट्रीय कालिदास पुरस्कार प्रदान किया जाएगा। इस महोत्सव के दौरान म.प्र. राज्य रूपांकर कला पुरस्कार भी प्रदान किया जाएगा।

94. (C)

मटकी म.प्र. राज्य का नृत्य का एक रूप है। जावरा, आदा, खाड़ा, नाच, फूलपत्ती, मानच म.प्र. के सबसे लोकप्रिय नृत्य रूप हैं। म.प्र. को 'भारत का हृदय' और 'भारत का बाघ राज्य' के रूप में जाना जाता है। भारत की सबसे बड़ी हीरे कवि खान पन्न म.प्र. में है।

95. (B)

म.प्र. के बुंदेलखण्ड में बेटियां जनजाति की महिलाओं द्वारा शई नृत्य किया जाता है। यह एक ऐसी जनजाति है जिसे वेश्यावृति की परंपरा के कारण बहुत बदनामी का सामना करना पड़ा है जो इसके भीतर पनपती है। इसे बेटिया जनजाति का लोक नृत्य जिसे 'शई' के नाम से जाना जाता है, इसकी विरासत और वर्तमान पहचान का एक आंतरिक हिस्सा है। यहां इस्तेमाल किए जाने वाले बाघ यंत्र ढ़ोल और नगाड़ा है।

96. (D) कर्मा नृत्य-

यह वार्षिक पारंपरिक नृत्य है जो कर्मा उत्सव के दौरान किया जाता है। छत्तीसगढ़, झारखंड, म.प्र., ओड़िशा और पश्चिम बंगाल की जनजातियों द्वारा किया गया। कर्मा नृत्य को कर्मा नाच भी कहा जाता है। कर्म का अर्थ 'भाग्य' होता है। कामरा त्यौहार भारत में मनाए जाने वाले प्रसिद्ध शरद ऋतु त्यौहारों में से एक है। यह फसल का त्योहार है। कर्म उत्सव हिंदू महीने भाद्रब के पूर्णिमा के 11वे दिन आयोजित किया जाता है।

97. (D) जवारा नृत्य-

लोक नृत्य रूप, जवारा, मूल रूप से एक किसान नृत्य है, जो बुंदेलखंड क्षेत्र के किसानों द्वारा फसल की कटाई पर, समृद्धि के उत्सव में किया जाता है। इस नृत्य में भाग लेने के लिए स्त्री और पुरुष दोनों रंग-बिरंगे परिहान पहनते हैं। महिलाएं नृत्य करते समय अपनी सिर पर ज्वार (झाडू-मकई) से भरी टोकरियाँ भी ले जाती है। यह देखने योग्य मनोरम द ृश्य है।

98. (A) अकीरी नृत्य- अकीरी लोक नृत्य ग्वालियर, म.प्र. का है। अकीरी नृत्य ग्वालियर के पशुपालकों की एक विशिष्टता है। इस नृत्य में धार्मिक परिवर्तन भी हैं क्योंकि ग्वालियर के विभिन्न समुदायों ने इस नृत्य को भगवान कृष्ण की संतान माना जाता है। अहरि, ग्वाल, रावत, बीट, और बरेड़ी समुदायों से संबंधित लोग आमतौर पर अहीर करते हैं। अहीर समुदाए इस संस्कृति और धार्मिक अवसरों का सबसे अधिक अनुयायी है।

99. (C)

भगोरिया म.प्र. के झाबुआ जिले की एक बड़ी जनजाति भीलों का एक प्रसिद्ध नृत्य है। यह नृत्य भगोरिया नामक त्यौहार और भगोरिया हाट मेले से जुड़ा है। त्यौहार का एक कृषि महत्व भी जुड़ा है क्योंकि यह फसल के मौसम में अंत का प्रतीक है और होली में एक सप्ताह पहले मनाया जाता है। जनजाति के अविवाहित लड़के और लड़कियां इस उत्सव की तैयारी करते हैं जो विवाह संगठन के उद्देश्य को पूरा करने के भावी दुल्हन के बीच संबंध स्थापित करके विवाह संघ के लिए अग्रणी होता है।

100. (C)

नौरता म.प्र. के बुंदेलखण्ड क्षेत्र में अविवाहित लड़कियों द्वारा किया जाने वाला नृत्य है। नौरता नृत्य भगवान के लिए अच्छा जोड़े और दामपत्य आनंद की मांग करने के लिए वधुओं द्वारा किया जाता है।

समीक्षा इंस्टीट्यूट